दलितों व शोषितों का पाक्षिक पत्र
विज्ञापन के लिए केन्द्रीय सरकार व राज्यों द्वारा स्वीकृत

हमायती

सम्पादक–डॉ0 सोहनपाल सुमनाक्षर

❑ *वर्ष 61* ❑ *अंक-8* ❑ *दिल्ली* ❑ *जनवरी (द्वितीय) 2023* ❑ *मूल्य : 2 रु.*

सूफीवाद–मानवता का सच्चा सुकून

• डा. सोहनपाल सुमनाक्षर

दिल्ली में 6-7 वर्ष पूर्व 17 मार्च, 2016 से आयोजित चार दिवसीय विश्व सूफी फोरम का उद्घाटन करते हुए प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने कहा कि अल्लाह के 99 नाम हैं लेकिन किसी भी नाम का मतलब हिंसा या बल नहीं है। अल्लाह के पहले दो नाम दया और करुणा को इंगित करते हैं। अल्लाह, रहीम और रहमान है। आतंकवाद और हिंसा के इस दौर में इस्लाम के उदारवादी चेहरे सूफीवाद से मानवता के लम्बे होते अंधेरे की छाया से बचाया जा सकता है। दुनिया में आतंकवाद का मुकाबला सूफीवाद से ही संभव है

प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने कहा कि सूफीवाद के लिए ईश्वर की सेवा का मतलब मानवता की सेवा है। यह ऐसे लोगों का सम्मेलन है जो शांति, सहिष्णुता और प्रेम में विश्वास रखते हैं। आप कई देशों से आये हैं और अलग–अलग संस्कृतियों से ताल्लुक रखते हैं, लेकिन सूफीवाद के माध्यम से एक सूत्र में बंधे हैं। सूफीवाद भारत की आध्यात्मिक परम्परा में रमा हुआ है। हमारे सभी लोग–हिन्दू, मुस्लिम, सिख, ईसाई, जैन, बौद्ध, ईश्वर को मानने वाले और नहीं मानने वाले, सभी भारत के अभिन्न हिस्सा हैं।

प्रधानमंत्री मोदी ने कहा कि बाइबिल के साथ–साथ हजरत मोइनुद्दीन चिश्ती, हजरत निजामुद्दीन, हजरत अमीर खुसरो, जलालुद्दीन रूमी, कबीर, गुरुनानक देव, स्वामी विवेकानन्द, भगवान बुद्ध, महावीर, तथा महात्मा गांधी की शिक्षायें सूफीवाद के रंग में गहरी रंगी है जो आत्मा, परमात्मा, प्रकृति को एकलय में लेकर मानवता की सेवा की ओर प्रेरित करती हैं।

इस चार दिवसीय सम्मेलन में जुटे 20 देशों के लगभग 200 मेहमानों ने सूफीवाद के शांति, सहनशीलता और बिना शर्त मुहब्बत का सन्देश दिया। आल इंडिया उलामा एंड मशाइख बोर्ड के संस्थापक और इस विश्व सूफी फोरम के आयोजक सैयद मोहम्मद अशरफ ने कार्यक्रम में आये अतिथियों का स्वागत करते हुए कहा कि न कोई गोरा है, न कोई काला है, न कोई अगड़ा है, न कोई पिछड़ा है। सभी एक ही रंग जाफरानी यानी गेरूआ में रंगे हुए हैं, यही सनातन है। यही 'सूफीवाद' है। यह 'दब्बुल' आलमीन' की बात कहता है और 'वसुधैव कुटुम्बकम्' की वकालत करता है। दिल्ली इस दौरान मानो मोहब्बत और भाईचारे की रूहानी खुशबू से सराबोर थी क्या अफगानी, क्या इरानी, क्या हिन्दुस्तानी, क्या पाकिस्तानी, क्या हिन्दू और क्या मुस्लमान–सभी इस खुशबू से सराबोर होने को उतावले थे।

दिल्ली सम्मेलन के इन चार दिनों में मोहब्बत, भाईचारे की रूहानी खुशबू से सराबोर थी। वर्ल्ड सूफी फोरम की इस इन्टरनेशनल कान्फ्रेंस का दस्तूर या ठेठ हिन्दुस्तानी, जिसकी आबोहवा में ख्वाजा गरीब नवाज मोइनुद्दीन चिश्ती से लेकर वली दकनी, अमीर खुसरो, रहीम बुल्लेशाह, कबीर, और रसखान सहित अनेक संतों, सूफियों और शायरों के सन्देश तैर रहे थे।

सैयद मोहम्मद अशरफ ने कहा कि बुल्लेशाह की तकरीरें, हजरत निजामुद्दीन औलिया के सन्देश, बाबा फरीद की फकीरी, कबीर का अलबेलापन, मोइनुद्दीन चिश्ती की सौगातों–सूफियों की धरती हिन्दुस्तान इन सबसे मिलकर बनी है। यहां दहशतगर्दी, फिरकापरस्ती, और खून खराबे के लिए जमीन तलाशने वालों को धूल चटा दी जायेगी। इस सम्मेलन में पहली बार एक मंच पर दुनिया के 20 देशों के 200 के करीब खानख्वाह, मदारिसें और आस्ताने एक साथ जुटे हैं जो इसमें दुनिया भर के सद्भावना दूत अमन–पसंदी का सन्देश लेकर भारत आये हैं। वे आतंकवाद की जुबान पर 'सूफीवाद' का ताला डालने की तैयारी के साथ आये हैं। वे जानते हैं कि सूफीवाद ही है इस्लाम की सच्ची तस्वीर। कुरान में कहा गया है कि किसी बेगुनाह का कत्ल, पूरी मानवता का कत्ल है। कोई एक व्यक्ति को बचाता है तो वह

(शेष पृष्ठ 7 पर)

सम्पादकीय

मनुस्मृति और रामचरितमानस पर हंगामा क्यों बिफरा?

• डा. सुमनाक्षर

बिहार सरकार के मंत्री श्री चन्द्रशेखर ने एक कालेज के दीक्षान्त समारोह में भाषण देते हुए कहा कि देश में तीन ग्रन्थ ऐसे हैं, जिन्होंने देश और समाज में विघटन पैदा किया है। इनसे समाज में वर्ण व्यवस्था, जातिवाद, ऊंच–नीच, भेदभाव, छुआछूत, नफरत को बढ़ावा मिला और जिस कारण हजारों साल तक भारतदेश विदेशियों का गुलाम बना। इन तीनों में पहली पुस्तक है–मनु द्वारा लिखी मनुस्मृति, दूसरी है–गोस्वामी तुलसीदास द्वारा लिखी–रामचरितमानस और तीसरी पुस्तक है गुरू गोलवरकर द्वारा लिखी पुस्तक–बंच आफ थाटस। इन तीनों ग्रन्थों ने देश और समाज में इंसानों के बीच विष घोलकर एक दूसरे का दुश्मन बना दिया। ऐसे ग्रन्थों को आग में जला देना चाहिए।

मंत्री चन्द्रशेखर के बयान के बाद बिहार सहित पूरे देश में बवाल मच गया कि उन्होंने हिन्दू धर्म ही नहीं, हिन्दू धर्मग्रन्थों का अपमान किया है और हिन्दू आस्था, उपासना, विश्वास पर आघात किया है, इसलिए ऐसे मंत्री को मुख्यमंत्री नीतिश कुमार को अपने मंत्रिमंडल से बर्खास्त कर देना चाहिए, और उस मंत्री चन्द्रशेखर से माफी मंगवाते हुए उसे अपना बयान वापिस लेने के लिए कहें। उनकी इस मांग पर मंत्री चन्द्रशेखर ने कहा कि न तो वह मंत्री पद छोड़ेंगे और न अपना बयान वापिस लेंगे। उल्टे उन्होंने ऐसे हिन्दूधर्म के अन्ध भक्तों को नसीयत दी कि वे पहले इन ग्रन्थों में वर्णित इंसान विरोधी जहरीले लेखन को पढ़ें और मनन करें। माफी तो उन्हें इन ग्रन्थों से प्रताड़ित व अपमानित दलित–शोषित, वंचित, बहिष्कृत लोगों से मांगनी चाहिए जिन्हें पीढ़ी–दर–पीढ़ी अपमान के घूंट पीते हुए नरकीय जीवन जीना पड़ा।

बिहार सरकार में शिक्षा मंत्री श्री चन्द्रशेखर को देश के दलित–शोषित व वंचित समाज के लोगों की ओर से धन्यवाद दिया जाना चाहिए कि उन्होंने 'पद' की परवाह न करके, स्व–अनुभूति को उजागर करके हिन्दू समाज के विघटन के कारण को समझा और दिल में व्याप्त सच्चाई को सामने रखा। दलित–शोषित–वंचित समाज के अधिकांश लोग मनुस्मृति की वर्ण व्यवस्था–जातिवाद से प्रताड़ित होते हुए भी उसके खिलाफ नहीं बोल पाते और पूरे जीवन अभिशप्त हुए जातिवाद के उस दुख को सहते रहते हैं। उसी तरह गोस्वामी तुलसीदास की रामचरितमानस की अधिकांश चौपाइयां अपने स्वाभिमान के विपरीत होते हुए भी मंदिरों में उन्हें सुनने को मजबूर होते हैं और उन चौपाइयों के खिलाफ एक शब्द बोलने का साहस नहीं जुटा पाते, जहां खुले रूप से पुजारी–पण्डे गाते हैं–

ढोल गंवार शूद्र पशु नारी।
ये सब ताड़न के अधिकारी।।

यही नहीं, वे इससे भी आगे बढ़कर कहते हैं–

(शेष पृष्ठ 3 पर)

भारतीय दलित साहित्य अकादमी प्रकाशन

विश्व धरातल पर दलित साहित्य	डॉ. सुमनाक्षर	50/–
अंधा समाज और बहरे लोग	डॉ. सुमनाक्षर	60/–
सिन्धु घाटी बोल उठी	डॉ. सुमनाक्षर	50/–
अब नहीं रहेंगे हाशिये पर	डॉ. सुमनाक्षर	80/–
अम्बेडकर शतक	डॉ. सुमनाक्षर	50/–
विश्व विभूति डा. अम्बेडकर	डॉ. सुमनाक्षर	50/–
दलित लेखक परिचय ग्रंथ (अंग्रेजी)	डॉ. सुमनाक्षर	250/–
बुद्धा दू अम्बेडकर (अंग्रेजी)	डॉ. सुमनाक्षर	150/–
दलित साहित्य	डॉ. सुमनाक्षर	100/–
अम्बेडकर दर्शन	डॉ. सुमनाक्षर	40/–
हमारे संत और समाज सुधारक	डॉ. सुमनाक्षर	60/–
धर्म और समाज	डॉ. सुमनाक्षर	40/–
आदिम जाति चमार (इतिहास, धर्म, संस्कृति)	डॉ. सुमनाक्षर	300/–
दलित उद्घोष	डा. सुमनाक्षर	80/–
दलित साहित्य की हुंकार–सात समन्दर पार	डॉ. सुमनाक्षर	100/–
युगपुरुष बाबू जगजीवनराम	डॉ. सुमनाक्षर	200/–
प्राचीन आदिम जाति वाल्मीकि (इतिहास, धर्म, संस्कृति)	डॉ. सुमनाक्षर	100/–
सभ्यता, संस्कृति, समाज और साहित्य	आचार्य गुरुप्रसाद	100/–
डा. अम्बेडकर भजनावली	राजमल 'राज'	25/–
भारत रत्न डा. बी.आर. अम्बेडकर	राजमल 'राज'	25/–
मूल भारती से दलित	राजमल 'राज'	50/–
अम्बेडकरवाद बनाम सामाजिक परिवर्तन	राजमल 'राज'	80/–
दलित साहित्य–दशा और दिशा	डा. माता प्रसाद	200/–
दलित साहित्य से सामाजिक परिवर्तन	डा. माता प्रसाद	100/–
भारत की गुलामी के 22 सौ साल	प्रदीप कुमार मौर्य	250/–
सृजन के कण	जीपी पचौरिया 'दीप'	150/–
बौद्ध धर्म–गया से अयोध्या तक	प्रदीप कुमार मौर्य	120/–
गांधी, अम्बेडकर और दलित	प्रदीप कुमार मौर्य	100/–
हम एक हैं	डा. माता प्रसाद	60/–
रैदास से संत शिरोमणि गुरु रविदास	डा. माता प्रसाद	50/–
ताकि सनद रहे	डा. सुमनाक्षर	100/–
Who's who Dalit Writers in India	Dr. Sumanakshar	500/-
Who's Who–International & National Awardees of B.D.S.A.	Dr. Sumanakshar	500/-

पुस्तक मंगाने के लिए मनीआर्डर से राशि अग्रिम भेजें, व्यवस्थापक

दलित साहित्य सेन्टर
(भारतीय दलित साहित्य अकादमी)
बी–3/9, दूसरी मंजिल, माडल टाउन–1, दिल्ली–9
मो. 9810278936, 9891989175

पूजिये विप्र गुण ज्ञान हीना।
पूजिये न शूद्र गुण ज्ञान प्रवीणा।।

गोस्वामी तुलसीदास ने तो रामचरितमानस में ऐसी चौपाइयाँ लिख डाली हैं जिनसे कोई भी समाज का श्रमजीवी, कर्मवीर अपने श्रम, निष्ठा, ईमानदारी, सच्चाई से रूबरू होता हुआ भी उन्हें अधम, नीच, कमीन, धूर्त दिखाई पड़ता है जिनके लिए कोई भी भलाई का काम उनकी दृष्टि में सांप को दूध पिलाने के समान है।

मनुस्मृति ने तो इंसानों को वर्ण व्यवस्था के आधार पर चार वर्णों में बांट दिया, फिर जातियों में बांट दिया, फिर उन्हें अलग–अलग व्यवसाय से बांध दिया। एक को सर्वोच्च बना दिया और दूसरे को सबसे निकृष्ट–अस्पृश्य–अछूत, बात–बात में ताड़ना का अधिकारी। इसीलिए देश कमजोर हुआ और मामूली से मामूली विदेशी आक्रमणकर्त्ताओं का गुलाम बनता गया। इसी लिए समय–समय पर इसके खिलाफ आन्दोलन हुए और इसे जलाया गया।

विश्व महिला दिवस के अवसर पर 8 मार्च, 2016 को जवाहर लाल नेहरू विश्वविद्यालय में, मनुस्मृति को महिला विरोधी मानते हुए वहां के छात्रों ने मनुस्मृति की प्रति जलाई। इससे बहुत पहले 25 दिसम्बर, 1927 को बाबा साहब डा. अम्बेडकर ने मनुस्मृति को दलित विरोधी मानते हुए उसकी होली जलाई थी। भारतीय दलित साहित्य अकादमी ने 1995 में मनुस्मृति और उसके रचियता मनु के पुतले को नई दिल्ली के कनाट प्लेस में आग लगाई थी चूंकि ये दोनों वर्ण व्यवस्था के पोषक हैं और इनके कारण दलितों (शूद्रों) के साथ हजारों साल से अत्याचार, अन्याय, दमन, शोषण, उत्पीड़न, अपमान, दुराचार होता आया है और आज भी उसके साथ छुआछूत, ऊंच–नीच, भेदभाव जारी है।

हिन्दू धर्मशास्त्रों में मनुस्मृति को सर्वोपरि मानता है और प्राचीन काल में समाज व्यवस्था, न्याय व्यवस्था शासन–प्रशासन, राज–काज मनुस्मृति के आधार पर चलता था, इसलिए मनुस्मृति की छाप सवर्णों के मन पर आज तक इस कदर बैठी हुई है कि वह 'स्त्री को पैर की जूती' और शूद्र–अछूत–दलित को 'इन्सान' मानने के लिए तैयार ही नहीं है, जबकि देश को सबसे ज्यादा नुकसान 'मनुस्मृति' के कारण हुआ है जिसने मनुष्य को चार वर्ण–ब्राह्मण, क्षत्री, वैश्य, शूद्र में बांटकर राष्ट्रीय एकता, अखंडता, बन्धुता को समूल नष्ट कर दिया। इसी का यह परिणाम है कि वर्ण व्यवस्था के कारण समाज का ताना–बाना नष्ट होने से देश कमजोर हो गया और वह दो हजार साल तक विदेशियों का गुलाम रहा। मनुस्मृति और उसके रचियता मनु ही देश की गुलामी के लिए जिम्मेदार हैं।

आर्यों को मनुस्मृति सर्वोपरि इसलिए है कि इसमें 'हिटलर' के आर्य सिद्धान्त की भांति ब्राह्मण को भगवान की श्रेष्ठतम कृति के रूप में दर्शाया गया है। ब्राह्मण की पातकी कर्म करने पर भी उसे 'अवध्य' ही माना गया है, शूद्र को तो जानवर से निकृष्टतम प्राणी माना है।

मनु की वर्ण व्यवस्था सामाजिक अन्याय का निन्दनीय स्वरूप रहा है। जब शूद्र को ब्राह्मण के साथ बैठने पर नितम्ब कटवाना पड़ा हो, ब्राह्मण को अपशब्द कहने पर मुंह में दस अंगुल की जलती हुई कील ठोकी जाती रही हो, हत्या के दोषी ब्राह्मण को केवल सिर मुंडा कर छोड़ने का प्रावधान देने वाली 'मनुस्मृति' की जितनी निन्दा की जाए, थोड़ी ही है।

मनु की 'मनुस्मृति' में वर्णित दण्ड व्यवस्था नितान्त शूद्र (दलित) विरोधी है जिसने दलितों के प्रति सवर्णों के दिलों में जात–पांत, ऊंच–नीच, भेदभाव, छुआछूत का ऐसा जहर घोला कि समाज में आज तक शूद्र–दलितों को समता के मानवीय अधिकारों के लिए संघर्ष करना पड़ रहा है। वर्णों के दिल, दिमाग, मन में शूद्र–दलितों के प्रति आज भी घृणा से भरे पड़े हैं और वे उन्हें उनके समानता के अधिकार देकर राष्ट्र की मुख्यधारा में लाने के लिए तैयार नहीं है। इसलिए इससे उत्पीड़ित लोग व्यथित होकर समय–समय पर विरोधस्वरूप इसकी होली जलाते रहते हैं।

'मनुस्मृति' के सभी 12 अध्याय शूद्र विरोधी विषमतापूर्ण, अन्यायकारी व्यवस्था से भरे हुए हैं जो निम्न उदाहरणों से स्पष्ट है–

1. (अवैज्ञानिक ढंग से) मुख से उत्पन्न होने से, ज्येष्ठ होने से, वेद धारण करने से ब्राह्मण ही सम्पूर्ण सृष्टि का स्वामी है (मनुस्मृति 1–13–14)

2. ब्राह्मण का मंगल सूचक शब्द से, क्षत्रिय का बल सूचक शब्द से, वैश्य का धन सूचक शब्द से और शूद्र (दलित) का निन्दित शब्द से नामकरण करना चाहिए। (मनु. 3–15) यह असमानता की पराकाष्ठा का सूचक है।

3. हीन जाति (शूद्र) के साथ विवाह करने वाले द्विजातीय सन्तान सहित कुलों को 'शूद्रत्व' प्राप्त हो जाता है (मनु. 3–15)।

4. जिस 'द्विज' के घर में अग्निहोत्र, यज्ञादि और श्राद्ध आदि शूद्रा स्त्री के द्वारा सम्पादित हो, उन्हें 'स्वर्ग' प्राप्त नहीं होता। (मनु. 3–15)

5. शूद्रा का अधरपान करने वाले या उसकी सांस से दूषित ब्राह्मण की और उससे पैदा होने वाली सन्तान की शुद्धि नहीं होती। (मनु. 3–19)

6. ब्राह्मण शूद्र के राज्य में निवास न करे (मनु. 4–61) शूद्र को व्रतादि का उपदेश न दे (मनु. 4–80) ब्राह्मण को क्रोधपूर्वक ताड़ने वाले को 21 जन्मों तक पाप योनियों में रहना पड़ता है। (मनु. 4–166)

7. ब्राह्मण को कटु वचन कहने पर क्षत्रिय को 100 पण, वैश्य को 150 पण और शूद्र को मृत्युदंड का जुर्माना होना चाहिए। (मनु. 8–267) द्विज को कटु वचन कहने पर शूद्र

की जीभ काट लेनी चाहिए। (मनु. 8–270)

8. द्विज जातियों (सवर्णों) का नाम लेकर अपशब्द कहने वाले शूद्र के मुख में जलती हुई दस अंगुल लम्बी लोहे की कील डाल देनी चाहिए। (मनु. 8–271)

9. राजा को ऐसे शूद्र के, जो ब्राह्मणों का उपदेश देने का, दंभ करे, उसके मुंह व कान में गरम तेल डालना चाहिए। (मनु. 8–272)

10. शूद्र जिस अंग से द्विज को मारे, उसका वह अंग ही कटवा देना चाहिए। (मनु. 8–279 / 280)

11. राजा ब्राह्मण के साथ बैठने पर शूद्र को तपाये हुए लोहे से दगवाकर राज्य से निकाल दे या उसके नितम्ब को कटवा दे। (मनु. 8–281)

12. शूद्र यदि ब्राह्मण का अपमान गर्व से थूक फेंककर करे तो उसका लिंग को या 'अपशब्द' कहने पर उसकी गुदा को कटवा दे। (मनु. 8–282)

13. शूद्र यदि अभिमान से ब्राह्मण को बालों से पकड़ ले तो राजा उसके हाथ कटवा दे। (मनु. 8–283)

14. ब्राह्मण शूद्र का धन बिना किसी विकल्प किये, ले ले क्योंकि धन का स्वामी मात्र ब्राह्मण ही है। (मनु. 8–417)

15. ब्राह्मण को पीड़ित करने वाले शूद्र को राजा हाथ पैर काट कर मार डाले। (मनु. 9–248)

16. (अवैज्ञानिक रूप से) मुख, बाहू और उदर से जन्मे ब्राह्मण, क्षत्रिय और वैश्यों के अतिरिक्त सभी जातियां मलेच्छ भाषा भाषी दस्यु हैं। (मनु. 10–45)

17. द्विजों के अतिरिक्त जातियों, वर्णशंकरों, चण्डाल आदि का निवास चैत्यद्रुम, श्मशान, पहाड़ों व वनों में ही है। (मनु. 10–50)

18. चाण्डाल स्वपच (शूद्र–दलित) गांव के बाहर निवास करें। उनका धन कुत्ते व गधे हों। कफन उनका वस्त्र हो, मिट्टी के फूटे बर्तनों में वे भोजन करें और यायावर (घुमन्तू) जीवन जीयें। (मनु. 10–51 / 52)

19. नीच जाति वाला मनुष्य यदि अपने से ऊंची जाति वालों को जीविका (नौकरी) दे तो राजा उसे निर्धन कर अपने राज्य से खदेड़ दे। (मनु. 10–96)

20. शूद्र की सेवा के बदले में ब्राह्मण उसे खाने के लिए मात्र जूठा अन्न, पहने के लिए पुराने कपड़े, बिछाने के लिए अन्न का पुआल या पुरानी टूटी–फूटी खाट आदि दे। (मनु. 10–25)

21. शूद्र को धन संग्रह की मनाई है क्योंकि वह धन ग्रहण करके ब्राह्मणों को ही पीड़ित करेगा। (मनु. 10–129)

22. शूद्र की हत्या करने पर ब्राह्मण मात्र एक बैल तथा ग्यारह गायें दान में दे–यही उसका प्रायश्चित है। (मनु. 11–30)

उपरोक्त उदाहरणों से स्पष्ट है कि मनुस्मृति को सर्वोपरि धर्म ग्रंथ बताकर ब्राह्मण अपने को सर्वश्रेष्ठ होने का दंभ भरते रहे और मानव जाति के एक समूह–शूद्र वर्ण का हजारों साल से निरन्तर शोषण करते रहे और उन्हें विद्या के प्रकाश से दूर रखा। अब यदि वे विद्या के प्रकाश में अपने शोषण को पहचानकर उस व्यवस्था की नियामक 'मनुस्मृति' को जलाते हैं तो इसमें दोष किसका है? मनु व मनुस्मृति के प्रति दलित जातियों का विरोध सही है।

आज स्वतंत्र भारत में जहां बाबा साहब डा. अम्बेडकर द्वारा निर्मित भारतीय संविधान लागू है जो प्रत्येक व्यक्ति को समता, स्वतंत्रता, बन्धुता के साथ न्याय, सुरक्षा, चिकित्सा की गारन्टी देता है, वहीं वह धार्मिक आस्था और मनवांछित पेशा की खुली छूट देता है। उस लोकतांत्रिक समतावादी भारतीय संविधान के सामने इस विषमतावादी, देश व समाज विरोधी मनुस्मृति व मनु मानसिकता को अब कोन क्यों बर्दाश्त करेगा?

स्वामी विवेकानन्द ने कहा था– ''युगों से ब्राह्मण भारतीय संस्कृति का थातीदार रहा है। अब उसे इस संस्कृति को सबके पास विकीर्ण कर देना चाहिए। उसने इस संस्कृति को जनता में जाने से रोका है। इसीलिए भारत पर मुसलमानों का आक्रमण संभव हो सका। ब्राह्मण ने संस्कृति के भण्डार पर ताला लगाकर रखा था, जन–साधारण को उसमें से कुछ भी नहीं लेने दिया, इसी लिए हजारों सालों तक जो भी जातियां भारत में आती रहीं, हम उनके गुलाम होते गये।

हमारे पतन का कारण ब्राह्मण की अनुदारता रही है। भारत के पास जो भी सांस्कृतिक कोष है, उस जन साधारण के कब्जे में जाने दो, और चूंकि ब्राह्मण ने यह पाप किया है, इसलिए प्रायश्चित भी सबसे पहले उसे ही करना चाहिए।'' •

एक अनाम राग

सूरज
उगलता है
किंशुक कुसुम सी आग
सुबह की देह पर,
एक अनाम राग।

नदी सूखती है
और बहने लगती है
सोमवती अमावस्या की भीड़
थरथराती काई–
उबकाई के बीच।

एक चिड़िया
चहचहाती हुई
लांघ जाती है
बेखौफ
सुलगता हुआ
समूचा आकाश।

एक पत्थर उछलता है
दलित बस्ती में
दबे पांवों
सिमट आई है
चेतना भुजाओं में
परचम थामे।

– डॉ. पुरुषोत्तम सत्यप्रेमी

बाबा साहब डॉ. अम्बेडकर की अमर कृति भारतीय संविधान एवं लाहौर का ऐतिहासिक भाषण

• अधिवक्ता अम्बिका सोनी

बाबा साहब डॉ. अम्बेडकर ने दलितों, शोषितों के अधिकारों के लिये अथक संघर्ष कर हमें इंसानियत की जिंदगी व मान सम्मान दिया है। उन्होंने अपना सम्पूर्ण जीवन दलित उद्धार के लिये समर्पित किया है। उन्होंने भारत के संविधान में दलितों–शोषितों के मूल अधिकारों को समाहित कर उन्हें, सामाजिक, आर्थिक, धार्मिक एवं राजनीतिक संवैधानिक अधिकार प्रदान किये हैं। भारत का संविधान दुनिया का महानतम संविधान है। लेकिन सत्ता में बैठे मनुवादी, संविधान का अनुशरण नहीं कर समाज के कमजोर वर्ग के हितों पर कुठाराघात कर घृणित कृत्य कर रहे हैं और हमारा दलित समाज अपने अधिकारों के लिये जागरूक नहीं है।

दलित नेता अपने स्वार्थवश मनुवादी सत्ताधारियों की चापलूसी में लगे हैं। अपने समाज के अधिकारों के हितों में संघर्ष करने के बजाय उनकी गुलामी करने में गर्व महसूस कर रहे हैं। देश के करोड़ों दलित शोषित समाज एवं हमारे नेताओं तक ने डॉ. अम्बेडकर द्वारा निर्मित संविधान पढ़ा ही नहीं है। न संविधान की गरिमा को समझा है, न ही संविधान के संरक्षण के लिये संघर्ष करने को तैयार हैं, बल्कि संविधान विरोधी कट्टर हिन्दुत्व के षड्यंत्र में शामिल होकर डॉ. अम्बेडकर के आन्दोलन को कमजोर करने उनके करवां को पीछे हटाने का कृत्य कर रहे हैं।

डॉ. अम्बेडकर दुनिया के महानतम विद्वानों में से एक थे। 29 अगस्त, 1947 को एक प्रस्ताव पास हुआ था। उस समय डॉ. अम्बेडकर को तीन सम्मान मिले थे। पहला सम्मान–वे संविधान सभा के सदस्य बने थे। दूसरा सम्मान था वे स्वतंत्र भारत के प्रथम कानून मंत्री बने थे और तीसरा सम्मान था वे संविधान निर्माता समिति के चैयरमैन बने थे। डॉ. अम्बेडकर ने यू.के., संयुक्त राज्य अमेरिका, आस्ट्रेलिया, रूस, जर्मनी, जापान, कनाडा, साउथ अफ्रीका, आयरलैंड सहित कई देशों के संविधानों का गहन अध्ययन करने के उपरान्त भारत का संविधान बनाया था, जिसके आधार पर 'प्रजातंत्र' स्थापित किया गया है।

डॉ. अम्बेडकर ने दलितों के हित संरक्षण में कई अहम कार्य किये हैं। लेकिन हम आज भी उन्हें समझ नहीं पाये हैं। डॉ. अम्बेडकर एक मार्गदर्शक है जो संसद की ओर इशारा करते हैं। क्या हम उसे समझना चाहते हैं कि वे क्या कहना चाहते थे। उनका कहना था विशेषकर दलितों के लिये, जिस तरह से मैं उठकर आगे ऊपर आया हूं, वैसे तुम भी आगे आओ और संसद तक पहुंचो। आजादी के बाद भी उच्च वर्ग, दबंगों द्वारा दलितों पर जुल्म, अन्याय, अत्याचार हो रहा है, उसके विरुद्ध हम कभी संगठित होना ही नहीं चाहते।

डॉ. अम्बेडकर की जयन्ती व जन्मदिवस पर हमें किसी भी राजनेताओं को नहीं बुलाना चाहिए। वे स्वयं आये और आम नागरिकों की तरह डॉ. अम्बेडकर की जयन्ती में शामिल रहे क्योंकि वह नेता भी डॉ. अम्बेडकर के निर्मित संविधान के बदौलत ही बना है। वह तो गुलामी में ही जी रहा था।

डॉ. अम्बेडकर ने इस देश को संविधान दिया है। सरकार दलितों के लिये क्या दे रही है? उनके नाम से देश में स्कूल, कॉलेज, यूनिवर्सिटी खोलना चाहिये और आज भी करोड़ों दलित शिक्षा के अधिकारों से वंचित हैं। उन्हें उच्च शिक्षा के अधिकारों से वंचित है। उन्हें उच्च से उच्च शिक्षा देना चाहिए उनके शैक्षणिक, आर्थिक, सामाजिक विकास के लिये भारत सरकार को काम करना चाहिए। तब ही उनकी डॉ. अम्बेडकर को सच्ची श्रद्धांजलि होगी अन्यथा वर्ष भर डॉ. अम्बेडकर जयंती मनाने की घोषणा नाटक ही साबित होगी।

डॉ. अम्बेडकर का एक ऐतिहासिक भाषण

लाहौर में जातपांत तोड़क मंडल की ओर से 1936 में एक सम्मेलन करने का आयोजन था। उसके अध्यक्ष के रूप में डॉक्टर साहब को चुना गया। कान्फ्रेन्स के होने से पहले ही इतना कौतूहल और उत्तेजना फैल गई कि उस कान्फ्रेन्स को ही स्थगित करना पड़ा। कान्फ्रेन्स के प्रबन्धकों में अध्यक्षीय अभिभाषण में वर्णित तथ्यों पर जिसे हिंदू धर्मी बर्दाशत नहीं कर सकते थे, मतभेद हो गया। कान्फ्रेन्स के प्रबन्धक चाहते थे कि डॉक्टर साहब अपने लिखित भाषण से कुछ ऐसे वाक्य निकाल दें जो वेदों की आलोचना से संबंध रखते थे। डॉक्टर साहब ने उन्हें स्पष्ट शब्दों में कह दिया कि वह अपने भाषण में लिखे एक वाक्य तो क्या, एक शब्द को निकालना भी सहन नहीं कर सकते। परिणामतः जातपांत तोड़क मण्डल वालों को यह कान्फ्रेन्स ही रद्द करनी पड़ी। उस अभिभाषण को डॉक्टर साहब ने एक पुस्तिका के रूप में प्रकाशित करा दिया जिसका नाम रखा गया 'जातिभेद उच्छेदन' (Anihilation of caste) यह पुस्तिक डॉक्टर साहब की सब रचनाओं में से विशिष्ठ स्थान रखती है।

इस पुस्तक में डॉक्टर साहब ने विस्तारपूर्वक तर्क देकर हिन्दुओं को चेतावनी दी थी कि अगर वे जीवित रहना चाहते हैं तो पारस्परिक जातिपांति मिटा दें। जातिपांति का ही दूसरा नाम 'वर्ण व्यवस्था' है। जब तक इसका विध्वंस या नाश

नहीं किया जाएगा, हिन्दुओं में कभी भी सामाजिक या धार्मिक एकता स्थापित नहीं हो सकती। वर्ण व्यवस्था का मूल वेद और स्मृतियां हैं। अतः इनका त्याग या खंडन किए बगैर वर्णव्यवस्था नहीं मर सकती और इसके रहते हिंदू जीना चाहता है तो वर्णव्यवस्था और उसके आधार या मूलभूत धर्मशास्त्रों का बहिष्कार कर दें, वरना शनैः–शनैः उस गलितांग कोढी की तरह इनके सब अंग–प्रत्यंग गल–सड़ जायेंगे और संसार से इनका नामोनिशान मिट जाएगा।

इस अभिभाषण में सुझाव दिया गया कि जन्म से मिली पुरोहित शाही को खण्डित करके पुरोहित बनने के लिए ईसाई पादरियों की तरह परीक्षा पास की जाए। जब तक किसी के पास इस परीक्षा का प्रमाण पत्र न हो वह पुरोहितायी न कर सके। आपने इस अभिभाषण में हिन्दुओं को सलाह दी कि ईसाइयों और मुसलमानों की 'बाईबल' और 'कुरान' की तरह इनका एक ऐसा धर्मग्रन्थ हो जो हिन्दू मात्र को धार्मिक और सामाजिक समता प्रदान करने वाला हो और उसमें वर्णित आध्यात्मिकता के ज्ञान का प्रत्येक हिंदू मात्र एक समान अधिकारी हों। केवल जन्म से ब्राह्मण ही हिंदू धर्म की ठेकेदारी के एक मात्र अधिकारी न माने जाए।' इस अभिभाषण में उन्होंने हिन्दुओं को सभ्य जातियों और जीवित जातियों द्वारा अपनाया सन्मार्ग दर्शाया था। मगर हिंदू उनके इस अभिभाषण पर आचरण करें तो इस देश में न कोई छोटा और न कोई बड़ा हिंदू, न कोई जन्म से पुण्य योनि (स्वर्ग या द्विज) और न कोई पापयोनि (शूद्र अछूत) हिंदू माना जाएगा। उस अभिभाषण का जैसा कि इसके शीर्षक से पता चल जाता है, सारांश यही है कि हिंदू धर्म का वास्तविक रोग ही वर्ण व्यवस्था या चातुर्वर्ण व्यवस्था है।

अतः इसका विध्वंस या सर्वनाश किये बगैर हिंदू धर्म अधिक समय तक और सम्मानपूर्वक जीवित नहीं रह सकता। जिस धर्म में मुख्य चार वर्ण और उनसे पैदा हुई चार हजार से भी ज्यादा जातियां आपस में ऊंच–नीच के विषैले विश्वास से रोगी और ओतप्रोत है, ऐसी व्यवस्था को धर्म कहलाने का कोई हक नहीं है। इस वर्ण व्यवस्था को मिटाने के लिये उन ग्रंथों को चाहे वे हिन्दुओं में कितने भी पवित्र और विशुद्ध क्यों न माने जाते हों, त्याग करना और हिंदू मात्र के लिए एक समान, एक धर्मसंहिता बनाने और मानने के सुझाव भी अभिभाषण में दिए गए थे, किंतु केवल जन्ममात्र से ही सवर्णों को मिला यह बड़प्पन छोड़ना कैसे स्वीकार हो सकता था, अतः उन्हें यह कांफ्रेंस रद्द करनी पड़ी।•

मूक लोगो

मेरे समय के
मूक लोगो
कब तक चुप रहोगे?
कुछ तो बोलो!
कुछ तो बोलो!
बोलो, इसलिए कि
तुम जी रहे हो
बोलो,
कुछ अपने लिए
कुछ अपने आने वाली
पीढ़ियों के लिए।
अपनी गुलामी और दर्द का
दस्तावेज खोलो।
बोलो,
अपनी आजादी के लिए
बोलो,
मेरे समय के मूक लोगो
बोलो,
बोलो, अपने वजूद के लिए
बोलो।

– अरविन्द कुमार सम्बल

आदत नहीं, मुझे चुप रहने की...

खामोशी से जुर्म सहने की,
नदियों की तरह, बहने की,
बोल ही पड़ते हैं लब मेरे,
आदत नहीं, मुझे चुप रहने की।

मैं जुल्म के खिलाफ लड़ा था
और आज भी खड़ा हूं,
लड़ रहा हूं अकेले एक जंग,
जिद पे अपनी अड़ा हूं!
सच के लिबास में,
झूठ को कहने की,
आदत नहीं, मुझे चुप रहने की।

पस्त हो जाएं हौंसले,
टूटता नहीं मैं हारने पर भी,
तन्हां चलना फितरत है,
नहीं रुकता पुकारने पर भी,
लक्ष्य ऊंचे,
पर जिद मुझे आगे बढ़ने की
आदत नहीं, मुझे चुप रहने की।

श्रम के बल पर मैंने,
जटिलताओं को सरल किया है
चट्टानों को काटकर ही,
पाषाणों को तरल किया है,
पसीने को भी बना लेता हूं,
बूंद झरने की,
आदत नहीं, मुझे चुप रहने की।

अंधी चाह का अंत नहीं,
पर दुनिया में कोई संत नहीं,
तपना पड़ता है सोने को भी,
आता निखार तुरंत नहीं,
संगमरमर के फर्श पर,
नगीने सा जड़ने की,
आदत नहीं, मुझे चुप रहने की।

दर्द भरी इस दुनिया में,
हर शख्स तन्हा अकेला है,
दगाबाज हैं सब लोग यहां,
बस नाम का ये मेला है,
यादों में उनकी रहकर,
भावनाओं में बहने की,
आदत नहीं, मुझे चुप रहने की।

खामोशी से जुर्म सहने की,
नदियों की तरह, बहने की,
बोल ही पड़ते हैं लब मेरे,
आदत नहीं, मुझे चुप रहने की।

– धर्मेन्द्र कुमार रविकुल

हिमायती
7 / जनवरी (द्वितीय) 2023 (कुल पृष्ठ 4)
प्रकाशन तिथि : 14 जनवरी, 2023

आर. एन. आई. नं. 40611/62
रजि. G-3/DL(N)/090/2018-2020

पृष्ठ 1 का शेष.....सूफीवाद–मानवता का सच्चा सुकून

पूरी मानवता को बचाता है।

पाकिस्तान के प्रभावशाली मौलवी मोहम्मद ताहिर उल कादरी ने कहा कि आतंकवाद को बढ़ावा देने के लिए मुखौटे के तौर पर धर्म का इस्तेमाल कतई बर्दाश्त नहीं किया जाना चाहिए। उन्होंने कहा कि भारत और पाकिस्तान को आपस में लंबित तमाम मुद्दे सुलझाने तथा क्षेत्र को आतंकवाद से मुक्त कराने के लिए खुले दिल से बातचीत करनी चाहिए।

इस विश्व सम्मेलन में कनाडा से आए इस्लामिक दूत अफरा जालाबी ने कहा कि महात्मा गांधी और खान अब्दुल गफ्फार खान ने मिलकर आजादी की लड़ाई लड़ी थी। भारत की नस नस में ऐसी नजीरें बसी हैं। यहां हर धर्म, सम्प्रदाय और रंग के लोग एक साथ रहते है। हिन्दुस्तान सह–अस्तित्व का मॉडल है।

लाहौर विश्वविद्यालय (पाकिस्तान) की शोधार्थी सुम्बुल इफ्तिखार ने कहा कि मैं 'सूफीवाद' विषय पर शोध कर रही हूं। इसके लिए मैं तीसरी बार भारत आई हूं। यहां सूफियों ने इस्लाम के बारे में जो सन्देश दिये हैं, वे आज भी लोगों के दिलों में बसते हैं। मुझे तो यहां कभी लगा ही नहीं कि मैं दूसरे देश से आई हूं।

इस सम्मेलन में हार्वर्ड यूनिवर्सिटी की शिक्षिका एलिजाबेथ ने कहा कि हम अपने देश में अखंडता, भाईचारा और शान्ति के लिए एक साथ खड़े होने के मामले में भारत की नजीर देते है। छात्रों को भारत का उदाहरण देकर समरसता के बारे में पढ़ाया जाता है। आज भारत आकर यह महसूस भी कर पा रही हूं।

इस अवसर पर बॉलीवुड गायक शादाब फरीदी ने बताया कि आज सूफीवाद से मुहब्बत ही इकलौती वजह है कि मैं संगीत की दुनिया में अपनी जगह बना पाया हूं। सूफीवाद का संदेश पूरी दुनिया में फैलाने के लिए यह मंच सबसे मुफीद है।

भारत में सूफीयत के प्रचलन में ख्वाजा हजरत निजामुद्दीन चिश्ती आदि बड़े सूफी सन्तों का जो काम था, उसे ललित भाषा में जनसाधारण तक पहुंचाने में अमीर खुसरो ने बड़ी मदद की। उनका 'सूफीयत' पर वह दोहा दृष्टव्य है–

गोरी सोवे सेज पर,
मुख पर डार केस।
चल खुसरो घर अपने,
रैन भई सबदेश।।

अमीर खुसरो का यह लोकप्रिय दोहा इस बात का द्योतक है कि सूफी मत की मूल धारा को भारतीय जमीन पर उतारने में उनका बड़ा काम है।

वेदान्त के लिए प्रख्यात उत्तर भारत में तसव्वुफ का 'अनलहक' नया नहीं था–'अहम् ब्रह्मास्मि'' का ही वह फारसी का संस्करण लगता था। पर सरयद, ब्रूअली, कलन्दरादि नैशापुर बदख्शां की यह बेल जो लाये, वह जामी। निजामी खैयाम, सत्तार, सब्सतरी–सभी का कलाम भारत की सरसब्ज और शादाप जमीन में हरिया उठा, प्रेम मार्ग का एक रूप, जिसमें 'मजाजी और हकीकी' का समन्वय था, भक्ति साहित्य के रूप में पहले ही सुपरिचित था। अमीर खुसरो के गीत इसलिए ग्रामवासी का जनपद सौन्दर्य लेकर इस भूमि में एकात्म हो गये।

अमीर खुसरो तो सूफीयत में इतने गहरे उतर गये कि उन्होंने आत्मा परमात्मा, प्रकृति को आत्मसात करते हुए 'छाता' काव्य पहेली के रूप में स्वयं भारत माता की छवि में यह कहे हुए खो गये–

घूम घुमेला लहंगा पहिने
एक पांव से रहे खड़ी।
आठ हाथ हैं उस नारी के
सूरत उसकी लगे परी।।
सब कोई उसकी चाह करे है
मुसलमान हिन्दू छत्री।।
खुसरो ने यह कही पहेली
दिल में अपने सोच जरी।।

हजरत अमीर खुसरो अनेक भाषाओं के ज्ञाता थे। पर 'सूफीयत' के कारण जनसाधारण की भाषा 'हिन्दवी' (हिन्दी) को ही तरजीह देते हुए उन्होंने कहा–

तुर्क हिन्दुस्तानियम,
मन हिन्दवी गोयम जवाब
जो मन हिन्दवी पुर्स,
ता नग्ज गोयम।

(मैं हिन्दुस्तान के बारे में सब कुछ जानता हूं। इसलिए वास्तव में अगर तुम मुझ से कुछ पूछना चाहते हो तो हिन्दी में पूछो। मैं तुम्हें अनुपम बातों को बता सकूंगा।)

भारत की धरती सूफीयत का मरकज है। मक्का–मदीना हज पर जाने से पहले जब तक हाजी दिल्ली में हजरत निजामुद्दीन औलिया और हजरत अमीर खुसरो की दरगाह पर सिर झुकाने के बाद अजमेर शरीफ में हजरत मोइनुदीन चिश्ती की दरगाह पर चादर चढ़ाकर मत्था नहीं टेकता तब तक उसकी हज यात्रा सफल नहीं मानी जाती।

सूफीवाद मानवता का सच्चा सुकून है जो हमें न कोई 'धर्म' दे सकता है और न ही कोई धर्म ग्रन्थ। 'सूफीवाद' इतना विनम्र, उदार, सहज और प्यार से लबालब है कि कट्टर धार्मिकता और संकीर्ण जातिवाद से चोट खाये व्यक्ति के साथ यह भाई चारे का मरहम लगाकर उसे शीतलता प्रदान करता है। सैकड़ों सालों से देश के करोड़ों शूद्रों, अछूतों, दलितों को लिए जिन्होंने मन्दिर में भगवान के द्वार और मस्जिदों में अल्लाह के किवाड़ बन्द रखकर उन्हें अपमानित व बेइज्जत करके उन्हें बाहर धकेल दिया था, तब सूफीयत की हजरत औलिया, पीर–फकीरों की दरगाहों ने उन्हें, अपनी आगोश में जगह

देकर प्यार–दुलार करके, उन्हें मानवीय बराबरी का सच्चा सुकून दिया और संदेश दिया कि भगवान व अल्लाह के लिए सभी बन्दे एक जैसे हैं। आज भी दलित शोषित–अछूत समाज के लोगों के दिलों में जो प्यार, मोहब्बत, लगाव, श्रद्धा 'सूफीयत' की इन दरगाहों के प्रति है', उतनी किसी मन्दिर या मस्जिद के प्रति नहीं है। संत शिरोमणि गुरु रविदास 'सूफीयत' की साक्षात मूर्ति थे। वे महान आध्यात्मिक गुरु थे जो कहते कि मन ही मन्दिर है। शुद्ध मन से अन्दर झांकिये–सच्चे भगवान के दर्शन हो जायेंगे। इसलिए वे खुलकर कहते थे–

मन्दिर से कोई घिन नहीं,
मस्जिद से नहीं प्यार
दोनों में राम–रहिम नहीं,
कहे रविदास चमार।।

छुआछूत, ऊंचनीच, भेदभाव से दूर, दिखावा, आडम्बर, और कठोर पूजा–पाठ विहीन, इंसानियत प्यार–मुहब्बत, भाईचारे से भरपूर, सीधी–सपाट बिना कोई बन्धन के वन्दना–अर्चना–पूजा–नमन से ईश्वर–अल्लाह से सीधी भेंट, मन की शुद्धता के साथ आत्मा–परमात्मा से सीधा साक्षात्कार–अनुभूति सैकड़ों साल से अछूत–दलित–उपेक्षित–पीड़ित लोगों को सूफी सन्तों की दरगाह पर मिलती रही है। इससे वर्ण व्यवस्था के जातीय बन्धनों से उत्पीड़ित होते हुए भी उन्होंने कभी किसी की परवाह नहीं की। उल्टे 'सूफीयत' में उनकी आस्था और गहरी होती गई। 'सूफीयत' से मिले इस मानवीय सुकून ने हिन्दू–मुस्लिम धर्म से दुत्कारे लोगों को एक नई ऊर्जा दी, सोचने की शक्ति दी, अपनी नई राह बनाने की प्रेरणा दी।

आज दलित समाज जो बुद्ध, रविदास, कबीर, जोतीबा फुले, डा. अम्बेडकर के मार्ग की ओर प्रशस्त है, इसके पीछे उन्हें 'सूफीयत' से मिली प्रेरणा है, जो रविदास जी के खुले शब्दों में कहता है–

जिसका मन चंगा,
उसकी खटोटी में गंगा।''

कबीर की वाणी में–

कबीरा मन शीतल भया,
जैसा गंगा नीर।
पीछे–पीछे हरि फिरें,
कहत कबीर कबीर।। •

भारतीय दलित साहित्य अकादमी का अद्वितीय ग्रन्थ आज ही मंगायें

Book of Record–Who's Who International and National Awardees of Bharatiya Dalit Sahitya Akademi

300 पृष्ठों का यह अकादमी का ऐतिहासिक, अद्वितीय, अनूठा ग्रन्थ है जिसमें अकादमी के गत 36 सालों में अन्तर्राष्ट्रीय व राष्ट्रीय नेशनल अवार्डियों का वर्षवार विवरण दिया गया है। इस ग्रन्थ का कान्टेंट (सन्दर्भ) भी A to Z–क्रमानुसार दिया गया है जहां कोई भी नेशनल या इन्टरनेशनल अवार्डी अपना नाम देखकर तुरन्त क्रमवार जान सकता है कि उसे सम्मेलन में किस वर्ष में कब, किस अवार्ड से सम्मानित किया गया था। अकादमी का वह सम्मेलन कब, कहां आयोजित हुआ और उस सम्मेलन में किस मुख्य अतिथि द्वारा उसे 'अवार्ड' देकर सम्मानित किया गया।

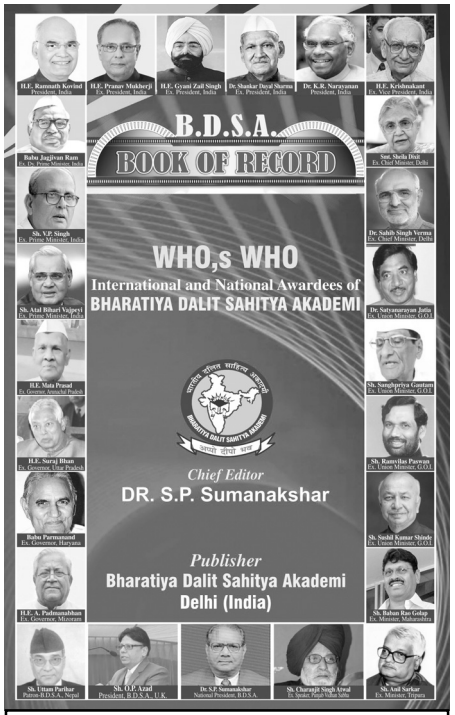

- **Total References of Personalities- about 2500**
- **Page : 300**
- **Price : Rs. 500/- Send by M.O./D.D.**

इस ऐतिहासिक ग्रन्थ में प्रत्येक अवार्डी का उसे अलग–अलग अवार्डों से सम्मानित होने का भी वर्षवार विवरण है साथ ही उन्हें एक, दो, तीन, चार 'स्टार' प्रदान कर उनके सामाजिक, साहित्यिक व सांस्कृतिक कार्यों के योगदान को दर्शाया गया है।

इस ऐतिहासिक, अद्वितीय, अनोखे ग्रन्थ के मुख पृष्ठ पर उन सभी राष्ट्रपति, उपराष्ट्रपति, प्रधानमंत्री, उपप्रधानमंत्री, राज्यपाल, मुख्यमंत्री, मंत्री व समाजसेवियों के चित्र दिये गये हैं जिन्होंने गत 36 वर्षों में मुख्य अतिथि के रूप में सम्मेलन की शोभा बढ़ाने के साथ–साथ सम्मेलन में प्रतिभागी प्रतिनिधियों को अपने उद्‌बोधन से राष्ट्र सेवा में अग्रसर रहने के लिए प्रेरित किया और उन्हें 'अवार्ड' से सम्मानित कर उनके रचनात्मक कार्यों व योगदान की सराहना की।

अंग्रेजी भाषा में प्रकाशित इस अद्वितीय ग्रन्थ में ढाई हजार के लगभग महानुभावों का विवरण दर्ज है जिनमें अवार्डियों के अलावा सम्मेलन के मुख्य अतिथि और अकादमी के संरक्षक, मार्गदर्शक और सहयोगी शामिल हैं।

दलित साहित्य पर शोधकर्त्ताओं, साहित्यकारों, समाजसेवियों के लिए यह ग्रन्थ अमूल्य है, पठनीय है और सन्दर्भ ग्रन्थ के रूप में संग्रहणीय है। बाबा साहब डा. अम्बेडकर को समर्पित इस अनमोल ग्रन्थ का मूल्य 500 रुपये है जिसे आर्डर देकर अकादमी कार्यालय से मंगाया जा सकता है।

इस ग्रन्थ के सम्पादक, संरक्षक, प्रकाशक अकादमी के राष्ट्रीय अध्यक्ष डा. सोहनपाल सुमनाक्षर हैं जिनके कई वर्षों के परिश्रम के बाद इस ग्रन्थ का प्रकाशन हो सका। ग्रन्थ मंगाने के लिए सम्पर्क करें–

भारतीय दलित साहित्य अकादमी
बी–3/9, दूसरी मंजिल,
माडल टाउन–I, दिल्ली-110009
मो : 9891989175, 9810278936
jay.sumanakshar@gmail.com

स्वामी, सम्पादक/ प्रकाशक एवं मुद्रक डॉ. सोहनपाल सुमनाक्षर द्वारा वन्दना आफसेट प्रिन्टर्स, A-9 सराय पीपलथला एक्सटेंशन, दिल्ली-33 में मुद्रित तथा कार्यालय : बी-3/9, दूसरी मंजिल, माडल टाउन, दिल्ली-110009 से प्रकाशित। ❑ सह सम्पादक - जय सुमनाक्षर, मो. 9810278936, 9891989175 **Email-sumanakshar@ymail.com, jay.sumanakshar@gmail.com**

नोट : हिमायती में प्रकाशित रचनाओं के लिए सम्पादक की सहमति जरूरी नहीं। हिमायती से सम्बन्धित किसी भी कानूनी कार्रवाई का क्षेत्र दिल्ली न्यायालय तक ही सीमित है।

सम्पादकीय कार्यालय : बी 3/9, दूसरी मंजिल, माडल टाउन-1, दिल्ली-110009